अलेक्सान्द्र पूश्किन

किस्सा जार सल्तान का,
उसके बेटे, यशस्वी और
महाप्रतापी सूरमा राजकुमार
ग्वीदोन सल्तानोविच तथा अनुपम
सुन्दरी, राजकुमारी राजहंसिनी का

चित्रकार: इ० बिलीबिन

प्रगति प्रकाशन
मास्को

क़िस्सा
ज़ार सल्तान का

इस पुस्तक के चित्रों को मैं रूसी स्वरकार नि॰ रीम्स्की-कोर्साकोव को समर्पित करता हूं।

इ॰ बिलीबिन

१६०५

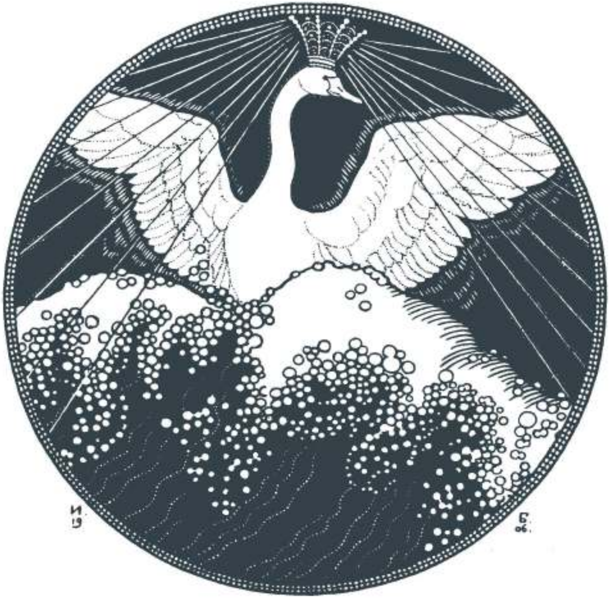
И.
19
Б.
06.

स्सा ज़ार सल्तान का, उसके बेटे, यशस्वी और महाप्रतापी सूरमा राजकुमार ग्वीदोन सल्तानोविच तथा अनुपम सुन्दरी, राजकुमारी राजहंसिनी का

तीन युवतियां रात गये चरखा कातें
बैठ निकट खिड़की के, और करें बातें,
पड़ी सुनाई बड़ी बहन की यह वाणी :
"ज़ार हमारे की यदि होती मैं रानी
बढ़िया-बढ़िया खाने खूब पकाती मैं
बड़ी दावतें करती, रंग जमाती मैं।"
पड़ी सुनाई तभी मझोली की वाणी :
"ज़ार हमारे की यदि होती मैं रानी
कपड़ा इतना ढेरों-ढेर बनाती मैं
एक, अकेली जग भर को पहनाती मैं।"
सबसे छोटी ने अब बात कही अपनी :
"होती ज़ार हमारे की यदि मैं पत्नी,
ज़ार-पिता के लिये सूरमा मैं जनती
वीर, बहादुर बेटे की अम्मां बनती।"

बात अभी मुंह से निकली, थी खत्म हुई
दरवाज़े ने धीमे-धीमे चूं-चूं की,
ज़ार इसी क्षण बैठक में भीतर आया
इसी राज्य के राजा ने था, चौंकाया,

पास बाड़ के खड़ा रहा वह तो सुनता
इन तीनों की बातों को मन में गुनता,
बात तीसरी लड़की की उसको भाई
सबसे ज़्यादा वह उसके मन पर छाई।
"नमस्कार करता सुन्दर सुकुमारी को
और शब्द यह कहता, तुमको, प्यारी को,
मेरी बीवी, मेरी रानी तुम्हीं बनो
मास सितम्बर तक तुम मुझ को वीर जनो।
और सुनो तुम इसकी दोनों बहनो, भी
छोड़ो अपना यह घर, बैठक, अभी-अभी,
तुम दोनों भी मेरे पीछे अब आओ
वहीं महल में तुम भी वांछित फल पाओ,
एक महल में कपड़ा खूब बनायेगी
और दूसरी खाना वहां पकायेगी।"

निकला बाहर ज़ार-पिता, लांघी ड्योढ़ी
और उसी क्षण राह महल की सबने ली,
नहीं ज़ार ने वक़्त गंवाया, देर न की
उसी शाम को उसने उस से शादी की।

बड़े ठाठ की दावत में राजा सल्तान
बैठा, पास बिठा कर रानी, सुघड़ जवान,
और बाद में सब अच्छे, ऊंचे मेहमान
शयन-कक्ष तक संग गये, गाते गुण-गान,
बिछा जहां गज-दन्ती पलंग बड़ा सुन्दर
छोड़ उन्हें उस जगह, गये सब अपने घर।
बैठ रसोईघर में बावर्चिन जलती
बुनकर नीर बहाये, पेश नहीं चलती,
अब तो राजा की पत्नी
उनके दिल की जलन बनी।
उधर ज़ार की पत्नी ने भी देर न की
व्यर्थ मामले को कुछ लम्बी ढील न दी,
उसी रात को भावी शिशु की नींव पड़ी,
लेकिन वह था वक़्त कि जब थी जंग छिड़ी।

गले लगा पत्नी को और विदा लेकर
ज़ार सवार हुआ जा बढ़िया घोड़े पर,
जाते-जाते बोला, ध्यान बहुत रखना
मेरे प्यार, प्रणय-फल की रक्षा करना।

He had listened by their gate
Whither he'd been led by fate

जब तक घर से बहुत दूर वह दुश्मन से
रहा जूझता डटकर बड़े प्राणपण से
इसी बीच तो बच्चे ने ले जन्म लिया –
ईश्वर ने गज भर का बेटा उन्हें दिया,
ज्यों उक़ाब की मादा अपने बच्चे पर
ऐसे शिशु पर रानी रखे कड़ी नज़र,
भेजा उसने हरकारे को ख़त दे कर
ताकि पिता ख़ुश हो पाकर यह सुखद ख़बर,
किन्तु जुलाहिन और बहन जो बावर्चिन
संग मिली थी जिनके मां भी बबरीख़िन,
उत्सुक थीं ख़त रानी का वे पा जायें
इसीलिये हरकारे को गुम करवायें,
दूत दूसरा भेजा तीनों ने मिलकर
और लिख दिये ख़त में कुछ ऐसे अक्षर:
"रानी जी ने बच्चा पिछली रात जना
लेकिन बिटिया और न बेटा वही बना,
वह तो मेंढक और नहीं चूहे जैसा
कभी जानवर अजब नहीं देखा ऐसा।"

ज़ार-पिता तो जैसे ही यह सुन पाया
सन्देसा जो हरकारा लेकर आया,
ग़ुस्से में उसने सब सुध-बुध बिसरायी
हरकारे को झट सूली देनी चाही।
लेकिन अगले क्षण ही तरस उसे आया,
हरकारे के हाथ हुक्म यह भिजवाया:
"करो प्रतीक्षा, जब तक मैं वापस आऊं
ख़ुद क़ानूनी ढंग से क़िस्सा निपटाऊं।"

यह आदेश ज़ार का वह फ़ौरी लेकर
दूत देश में पहुंच गया अपने आख़िर,
किन्तु जुलाहिन और बहन जो बावर्चिन
संग मिली थी जिनके मां भी बबरीख़िन

ज़ार हुक्म का वे तीनों पाना चाहें
हरकारे को मदिरा बेहद पिलवायें,
उसके थैले में से वह फ़रमान निकाल
दिया दूसरा काग़ज़ उसमें लिखकर डाल,
और झूमता दूत नशे में वह आया
उसी रोज़ फ़रमान ज़ार का यह लाया:
"हुक्म वज़ीर बजा मेरा फ़ौरन लायें
व्यर्थ गंवाकर वक़्त ढील मत दिखलायें,
बच्चे के संग ले जाकर मेरी रानी
चुपके से दें फेंक, जहां गहरा पानी।"
अब वज़ीर-बोयार विचारे क्या करते
होकर मन में दुखी, सभी आहें भरते,
वारिस, युवती रानी का दुख तड़पाये
पर बेबस, वे सभी महल में घुस आये,
निर्णय ज़ार-पिता का उनको बतलाया
मां-बेटे को, जिन पर था दुर्दिन छाया,
ऊंचे-ऊंचे सुना ज़ार का वह फ़रमान
उन लोगों ने रानी औ' उसकी सन्तान,
दोनों को पीपे में झटपट बन्द किया
राल लगायी, पीपा अपने संग लिया,
पहुंचे सागर तट पर, उसको दिया बहा
और इस तरह हुक्म ज़ार का दिया बजा।

तारे चमक रहे हैं नीले अम्बर में
महातरंगें उठतीं नीले सागर में;
काला बादल ऊपर नभ में तैर रहा,
पीपा नीचे सागर में जा रहा बहा,
जैसे कोई विधवा हो दुख की मारी
वैसे उसमें रोये रानी बेचारी;
किन्तु उसी में बच्चा था ऐसे बढ़ता
दिन की बढ़ती घण्टे में पूरी करता।
बीत गया दिन, रानी तो रोती जाये...

बच्चा बड़ी लहर को तेज़ी में लाये:
"मेरी बात सुनो तो, प्यारी बड़ी लहर!
तुम तो हो आज़ाद, घूमती इधर-उधर,
जिधर तुम्हारा मन आता, तुम जाती हो,
सागर के पत्थर तुम संग बहाती हो,
पानी में धरती, तट तुम्हीं डुबाती हो,
जल-यानों को ऊंचा तुम्हीं उठाती हो,
हम दोनों की जान, लहर, तुम व्यर्थ न लो –
जल्दी से सूखी धरती पर पहुंचा दो!"
बात मानकर बच्चे की यह बड़ी लहर
उसी समय बढ़ चली लपक सूखे तट पर,
लायी हल्के-से पीपे को साथ बहा
और बहुत धीरे से तट पर दिया टिका।
मां-बच्चे की जान बची
मां ने धरती अनुभव की।
लेकिन पीपे से अब कौन निकालेगा?
क्या न ईश संकट से उन्हें उबारेगा?
बेटा ऊपर उठा, खड़ा हो पैरों पर
टिका दिया ढक्कन-संग उसने अपना सिर,
ज़ोर लगाया उसने अपना थोड़ा-सा:
"कैसे इसमें छेद बनायें चौड़ा-सा?"
उसने इतना कहा, तभी ढक्कन टूटा
बाहर निकला तुरत, क़ैद से ज्यों छूटा।

मां-बेटे ने मुक्त पुनः ख़ुद को पाया
टीला भी, मैदान नज़र उन को आया,
सभी ओर लहराता था नीला सागर
औ' बलूत का वृक्ष खड़ा था टीले पर।
सोचा बेटे ने दिल में: "अच्छा खाना
जैसे भी हो, हमें चाहिये अब पाना।"
शाखा एक बलूती झट तोड़ी उसने
और कमान बनाने को मोड़ी उसने,

Ere he rode forth for the strife,
Tsar Saltan embraced his wife

ली सलीब से उसने रेशम-डोर निकाल
बांध शाख पर धनुष बनाया, किया कमाल,
ले सरकंडा, सिरा नुकीला उसका चीर
बना लिया हल्का-फुल्का-सा उसने तीर,
चला छोर पर घाटी के ले मन में आस
पा जायेगा वह शिकार सागर के पास।

पहुंचा ही था सागर-तट पर, ले यह चाह
उसको मानो पड़ी सुनाई आह, कराह...
बात साफ़ थी, सागर में थी कुछ गड़बड़;
देखा, दृश्य भयानक आया उसे नजर–
पंख पटकती एक हंसिनी भय-आतुर
चील एक मंडराती थी उसके ऊपर;
वह बेचारी पंख झटकती जाती थी
भंवर बनाती और फुहार उड़ाती थी...
उधर चील ने पंजे अपने फैलाये
खूनी चोंच साधकर वह नीचे आये...
किन्तु इसी क्षण हुई तीर की भी सन सन,
डाली उसने बींध चील की झट गर्दन–
खून चील का बहता था अब सागर में
धनुष किया बालक ने अब नीचा कर में;
देखा–चील डूबती जाती पानी में
कराह रही वह तो मानव की वाणी में,
और हंसिनी पहुंच निकट, कर वार रही
दुष्ट चील को चोंच ज़ोर से मार रही,
उसकी अन्तिम घड़ी निकट वह लाती थी,
मार-मार कर उसको पंख डुबाती थी–
दुष्ट चील से आखिर को छुट्टी पाकर
बोली रूसी भाषा में वह यों आकर:
"तुमने, राजकुमार, बचाई मेरी जान
परम प्रतापी तुम मेरे रक्षक बलवान,
मेरे कारण भूखे अब होगा रहना
तीन दिनों तक तुमको, तुम इसको सहना,
बात बुरी, जा गिरा दूर सागर में तीर
लेकिन ग़म मत करो, करो मत हृदय अधीर,
तुम ने नेकी की, मैं उसका फल दूंगी
योग्य तुम्हारी सेवा के मैं भी हूंगी,
नहीं हंसिनी, जिसकी अभी बचाई जान,
मैं लड़की हूं, दिया मुझे नवजीवन दान,
नहीं चील थी, हत्या तुम ने जिसकी की
जादूगर था, जान तीर से जिसकी ली,
यह एहसान न भूलूंगी मैं जीवन भर
मुझको पाओगे तुम, चाहो जहां, जिधर,
और अभी तो जाओ तुम, वापस जाओ
सो जाओ तुम, ज़रा न दुख मन में लाओ।"

उड़ी हंसिनी, गयी दूर सागर के पार,
सागर-तट पर रानी थी, था राजकुमार,
सारा दिन बीता दोनों का भूखे पेट
रात बिताने को वे गये वहीं पर लेट,
नींद रात की, अपने सपने दूर भगा
खोल आंख जब तड़के राजकुमार जगा,
बड़ा अजूबा हुआ, अरे! यह क़िस्सा क्या
दंग रह गया देख सामने नगर बड़ा,
ऊंची-ऊंची दीवारें थीं दांतेदार
उन सफ़ेद दीवारों से हट, उनके पार,
गिरजों और मठों के गुम्बज चमक रहे
अपनी आभा, छटा दिखाते दमक रहे।
मां-रानी को उसने जगा दिया फ़ौरन
वह चकरायी, बोली: "यह सच, या कि सपन?"
बोला राजकुमार: "नज़र ऐसा आये
श्वेत हंसिनी मेरी, यों मन बहलाये।"
अब मां-बेटा, दोनों चले नगर की ओर
लांघी चारदीवारी, ज्योंही उसका छोर,
गूंजे घण्टे ज़ोरों से, हों बहरे कान
सभी दिशाओं में जो बजते एक समान,
स्वागत करनेवालों का आया तूफ़ान
भजन-मंडली करती थी प्रभु का गुण-गान,
बैठ रथों में सोने के भारी-भारी
स्वागत करने आये सारे दरबारी,
ये सब ऊंचे-ऊंचे इनका यश गायें
राजकुंवर को राज मुकुट मिल पहनायें,
सब ने उसको राजा अपना मान लिया
राजा के अनुरूप मान-सम्मान दिया,
मां-रानी की अनुमति ले, आज्ञा पाकर
नये राज्य की गद्दी पर बैठा जाकर,
और सम्भाला इसी रोज़ से शासन-भार
यों राजा ग्वीदोन बना यह राजकुमार।

सुखद पवन सागर पर बहता जाता था
एक पोत को अपने संग बहाता था,
वह लहरों पर मानो दौड़ा जाता था
फूले-फूले पालों को फहराता था।
नाविक दंग हुए, अचरज में वे आयें
एकसाथ सब खड़े, देखते वे जायें,
एक द्वीप जो उनका जाना-पहचाना
देखें उस पर एक अजूबा अनजाना,
स्वर्ण गुम्बजों वाला था नव-नगर खड़ा
घाट दूर तक फैला, फाटक बहुत बड़ा–
गरजीं तोपें मानो यह संकेत किया
पोत वहीं रुक जाये यह आदेश दिया।
खड़े हुए थे तट पर व्यापारी-मेहमान
उन्हें बुलाया राजा ने करने जल-पान,
खूब खिलाकर और पिला मदिरा जी भर
यह अनुरोध किया प्रश्नों के दें उत्तर
बतलायें: "किन चीज़ों का करते व्यापार

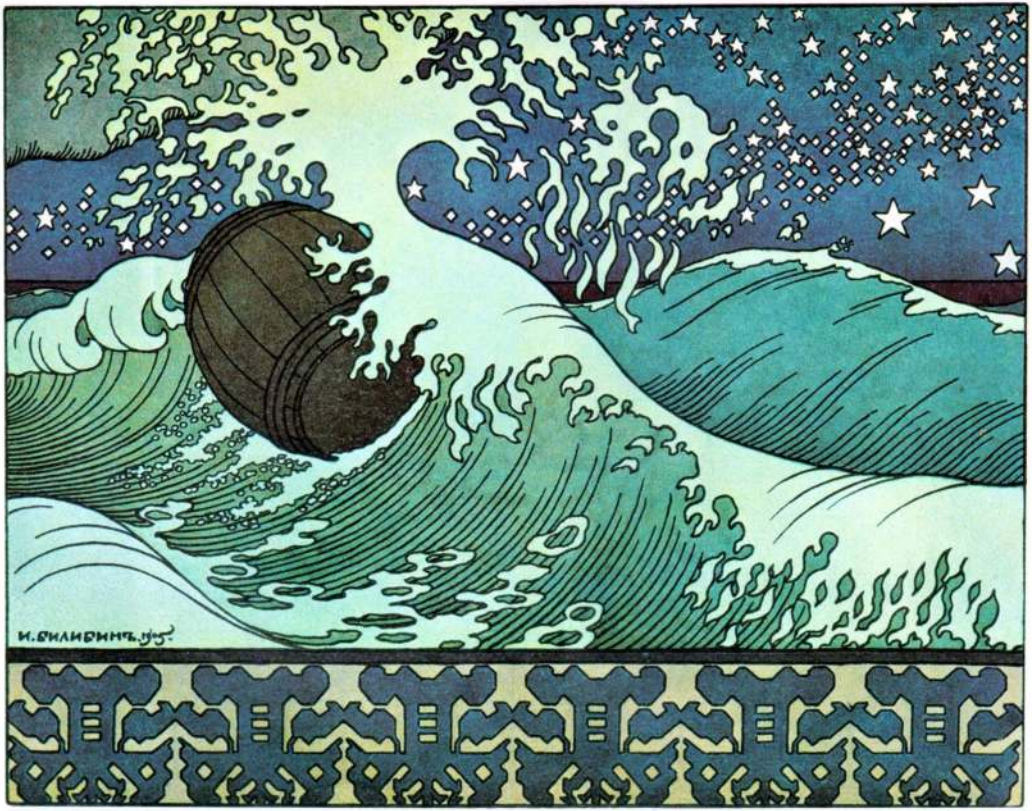

Stars gleam in the dark blue sky,
Dark blue billows heave and sigh.

Storm clouds o'er the blue sky creep,
While the cask rides o'er the deep

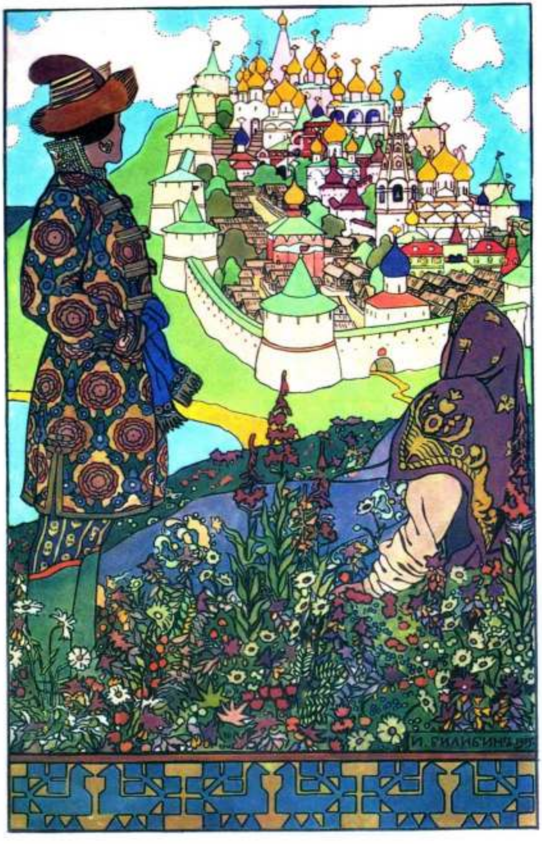

ग्रौर किधर ग्रब जायेंगे इस सागर-पार ?"
बोले सौदागर उससे तब यह सुनकर :
"काट चुके हम सारी दुनिया का चक्कर,
जगह-जगह हम बेचा करते श्रेष्ठ समूर
बढ़िया-बढ़िया फ़र ले जाते हैं ग्रति दूर,
देर हुई, ग्रब जल्दी से घर को जाना
सीधे पूरब का पथ हमको ग्रपनाना,
मार्ग हमारे में ग्रायेगा द्वीप बुयान
जहां यशस्वी राजा राज करे सल्तान..."
बोला उनसे तभी हमारा राजकुमार :
"यात्रा सफल तुम्हारी हो सागर के पार,
लांघो तुम तो सागर ग्रौर महासागर
पहुंचो वहां, राज ज़ार का जहां, जिधर
नमस्कार मेरा कहना उनसे झुककर।"
चले गये मेहमान, दुखी ग्वीदोन मगर,
खड़ा हुग्रा था तट पर वह ले भारी मन
ग्रौर पोत को ताक रहे थे दूर नयन,
देखा उसने – सागर-लहरें, धारा चीर
बढ़ी ग्रा रही श्वेत हंसिनी सागर-तीर।
"नमस्कार करती हूं तुमको, राजकुमार
क्यों उदास दिन जैसे, दिल पर कैसा भार?
किस पीड़ा ने ख़ुशी तुम्हारे मन की ली?"
श्वेत हंसिनी बहुत निकट ग्रा, यों बोली।
बोला उससे राजकुमार दुखी हो कर :
"बोझ उदासी, पीड़ा का मेरे मन पर,
दुख यह मेरे दिल से जाता नहीं सहा
पूज्य पिता से मिलने को मन ललक रहा।"
"समझ गयी मैं, कसक तुम्हारे क्या उर में
बोलो, चाहोगे क्या जाना सागर में,
उस जहाज़ पर, ग्रभी इस समय तुम उड़कर
यदि ऐसा, तो राजकुमार बनो मच्छर।"
उसने इतना कहा ग्रौर झट पंख हिला,
ज़ोर-ज़ोर से पानी ऊंचा ख़ूब उड़ा,
उसे भिगोया, ग्रौर किया पानी से तर
सिर से पैरों तक डाला पानी उस पर,
एक बिन्दु में छोटे-से तत्क्षण बदला
मच्छर की सूरत में राजकुमार ढला,
पंख हिलाता, जल्दी से भनभन करता
सागर में जा रहे पोत तक वह उड़ता,
चुपके-चुपके वह जहाज़ में घुसा कहीं
छेद ढूंढ़कर कोई ग्रच्छा, छिपा वहीं।

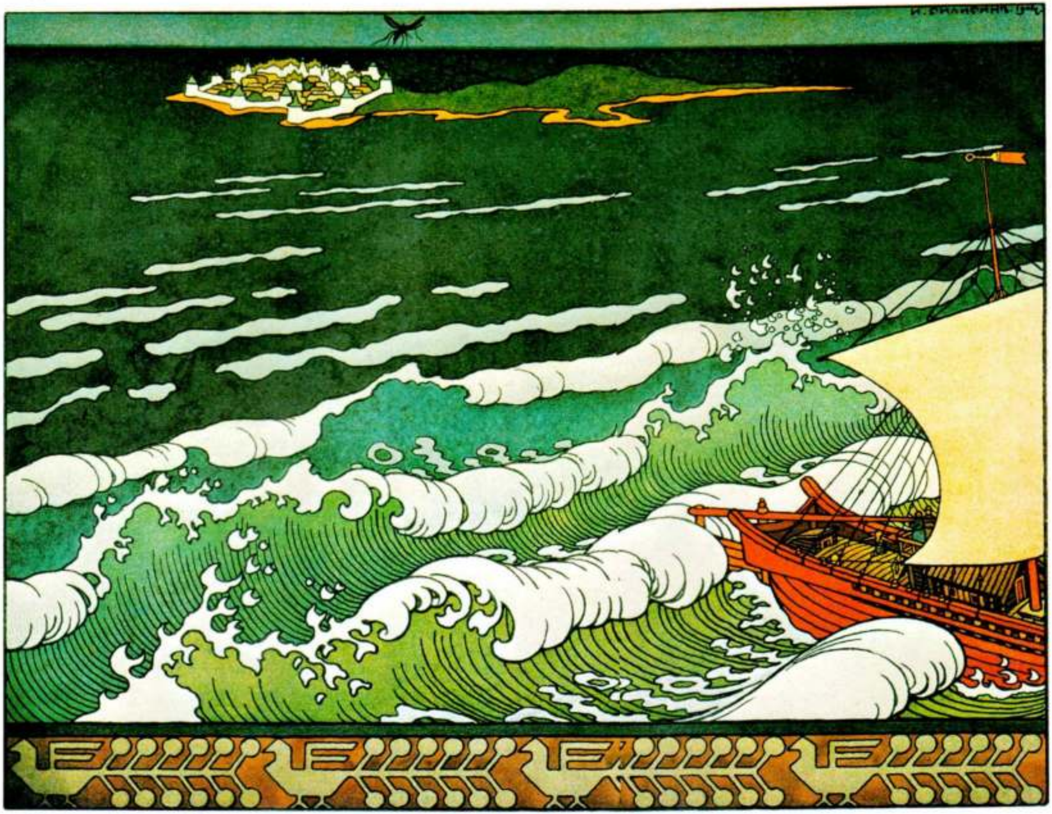

...Buzzed, and flying rapidly,
Overtook the ship at sea

हर्ष-मगन-सा पवन मचाये ऊंचा शोर
पोत ख़ुशी से भागा जाता था उस ओर,
जहां बसा वह द्वीप कि जिसको कहें बुयान
जहां यशस्वी जार राज करता सल्तान,
यही सुहाना देश सभी का मन-भाता
बहुत दूर से देखो, नजर वही आता।
लो, मेहमान निकलकर अब तट पर आये;
जार महल में अपने सब को बुलवाये,
उनके पीछे वीर हमारा तेज उड़े
जिधर गये मेहमान दिशा में उसी बढ़े।
देखा – स्वर्णिम चमक रहे पहने परिधान
सभा-भवन में बैठा है राजा सल्तान,

ऊंचा सिंहासन है मुकुट बड़ा सुन्दर,
लेकिन कुछ चिन्ता-रेखा दिखती मुख पर,
और जुलाहिन, वहीं पास में बावर्चिन
संग मिली थी जिनके मां भी बबरीखिन,
बैठी थीं तीनों सिंहासन से सटकर
ताक रही थीं जार पिता को टिका नजर।
मेहमानों को निकट जार ने बिठा लिया
दे आदर-सम्मान, और यह प्रश्न किया:
"तुम प्यारे मेहमान, कहां पर हो आये?
क्या-क्या देखा और जान क्या कुछ पाये?
सागर-पार हाल कैसा है दुनिया का?
चमत्कार या कहीं अजूबा तुम्हें दिखा?"

दिया उसे व्यापारी दल ने यह उत्तर:
"दुनिया भर का पूरा कर आये चक्कर –
सागर-पार हाल अच्छा है, दुनिया का
एक अजूबा, चमत्कार यह हमें दिखा,
एक द्वीप था सागर में ऊंचे तट का
वह बिल्कुल वीरान, न कोई घर-दर था,
दूर-दूर तक सन्नाटा, सुनसान बड़ा,
था बलूत का पेड़ वहां पर एक खड़ा,
लेकिन अब तो वहां बना है नगर नवल
और दिखाई देता सुन्दर वहां महल,
स्वर्ण गुम्बजों वाले हैं गिरजे ऊंचे,
बुर्ज-बुर्जियां वहां बाग़ हैं बागीचे,

राज करे ग्वीदोन, यही है उसका नाम
और कहा है उसने सादर तुम्हें प्रणाम।"
हुआ बहुत आश्चर्य ज़ार को यह सुनकर
बोला : "जिन्दा इस दुनिया में रहा अगर,
तो अवश्य मैं द्वीप अनूठा देखूंगा,
कभी अतिथि ग्वीदोन ज़ार का मैं हूंगा।"
किन्तु जुलाहिन और बहन जो बावर्चिन
संग मिली थी जिनके मां भी बबरीखिन,
नहीं चाहतीं, उनका ज़ार वहां जाये
अजब-अनूठा द्वीप देखने वह पाये।
"खूब अजूबा तुमने यह भी बतलाया,"
आंख मारकर भाव बहन को समझाया;
बोली बावर्चिन : "कैसा आश्चर्य बड़ा
सागर के तट पर है कोई शहर खड़ा!
असल अजूबा जो है, वह मैं बतलाती –
ऐसी एक गिलहरी, जो गाना गाती,
जंगल में फ़र-वृक्ष, रहे वह तो उस पर
और बहुत अखरोट कुतरती है दिन भर,
उन अखरोटों को साधारण मत मानो,
उनके छिलके सोने के यह सच जानो,
उनकी गिरियां तो असली मरकत मणियां,
अगर अजूबा कोई है, तो यही, वहां।"
हुआ अचम्भा बड़ा ज़ार को यह सुनकर,
आग-बबूला होता जाये, पर, मच्छर,
आंख दाहिनी पर मौसी की वार किया,
पूरा ज़ोर लगाकर प्रबल प्रहार किया।
रंग उड़ा बावर्चिन का वह घबराई
गयी आंख की ज्योति, कि जैसे पथराई।
उसकी मां भी, बहन और नौकर-चाकर
झपट रहे थे सब मच्छर पर चिल्लाकर :
"ख़बर अभी तेरी लेते हैं दुष्ट, अरे!"
निकला वह खिड़की से भागा दूर, परे,

और चैन से वह तो सागर-पार गया
उसी राज्य में अपने, जिसमें नगर नया।

राजकुमार खड़ा फिर तट पर, भारी मन
ताक रहे नीले सागर को विकल नयन,
देखा उसने – सागर लहरें, धारा चीर
बढ़ी आ रही श्वेत हंसिनी सागर-तीर,
"नमस्कार करती हूं तुमको, राजकुमार,
क्यों उदास दिन जैसे, दिल पर कैसा भार?
किस पीड़ा ने खुशी तुम्हारे मन की ली?"
श्वेत हंसिनी बहुत निकट आ यों बोली।
बोला उससे राजकुमार दुखी होकर :
"बोझ उदासी, पीड़ा का मेरे मन पर
एक अजूबा ऐसा है मैं बतलाऊं
बहुत चाहता किसी तरह उसको पाऊं,
ऐसी एक गिलहरी, जो गाना गाती
अपना, लोगों का भी वह मन बहलाती,
जंगल में फ़र-वृक्ष, रहे वह तो उस पर
और बहुत अखरोट कुतरती है दिन भर,
उन अखरोटों को साधारण मत मानो,
उनके छिलके सोने के इतना जानो,
उनकी गिरियां तो असली मरकत मणियां,
नहीं जानता लोग करें सच, झूठ बयां।"
कहा हंसिनी ने तब उससे : "राजकुमार,
बात गिलहरी की सच्ची करता संसार,
मैं तो परिचित, ऐसे, इसी अजूबे से,
प्यारे राजकुमार, भगाओ दुख मन से,
बहुत खुशी से मैं यह तेरा काम करूं
तुम हो मित्र, तुम्हारा मैं दुख-दर्द हरूं।"
मन का बोझ हटाकर, बहुत खुशी होकर
झटपट राजकुमार चल दिया अपने घर।
चौड़ा आंगन – क़दम वहां ज्योंही रक्खा

ऊंचे फ़र के नीचे – यह तो क़िस्सा क्या?
देखे – सबके सम्मुख वहां गिलहरी एक
सोने के अखरोट रही थी कुतर अनेक,
और निकाल रही थी वह मरकत मणियां
सोने के छिलकों को करती जमा वहां,
उनके ढेर समान लगाती वह जाती
और बजाकर सीटी, गाना यह गाती :
'लड़की घूमे बागीचे या उपवन में',
साधारण, सम्मानित जन स्तम्भित मन में,
था राजा ग्वीदोन बहुत मन में हैरान
पर आभार हृदय में उसने अपने मान,
कहा : "हंसिनी तुम्हें खुशी-सुख दे भगवान
जैसी आज खुशी का मैंने पाया दान।"
और बाद में बिल्लौरी घर बनवाया
काम गिलहरी के रहने के वह आया,
वहां सन्तरी उसने तगड़े खड़े किये
औ' मुनीम बैठाया क़लम-दवात लिये,
गिनती कर अखरोटों की, वह दर्ज करे
बढ़े गिलहरी का यश, हर दिन कोष भरे।

सुखद पवन सागर पर बहता जाता था
एक पोत को अपने संग बहाता था,
वह लहरों पर मानो दौड़ा जाता था
फूले-फूले पालों को फहराता था,
खड़े तटों का द्वीप पास से जब गुज़रा
नगर बड़ा-सा एक सामने जब उभरा,
गरजीं तोपें मानो यह संकेत किया
पोत यहीं रुक जाये यह आदेश दिया,
खड़े हुए थे तट पर व्यापारी-मेहमान
उन्हें बुलाया राजा ने करने जल-पान,
खूब खिलाकर और पिला मदिरा जी भर
यह अनुरोध किया प्रश्नों के दें उत्तर,

बतलायें : "किन चीजों का करते व्यापार
और किधर अब जायेंगे इस सागर-पार ?"
बोले उससे व्यापारी तो यह सुनकर :
"काट चुके हम सारी दुनिया का चक्कर,
घोड़े बढ़िया बेच दूर तक हम आये
दोन-क्षेत्र से, जिनको अपने संग लाये,
देर हुई, अब जल्दी से घर को जाना
मंजिल दूर बहुत, पथ सीधा अपनाना,
उसी राह से, जहां मार्ग में द्वीप बुयान
जहां यशस्वी राजा राज करे सल्तान..."
बोला उनसे तभी प्रतापी राजकुमार :
"यात्रा सफल तुम्हारी हो सागर के पार
लांघो तुम सब सागर और महासागर
पहुंचो वहां, राज ज़ार का जहां, जिधर
नमस्कार मेरा कहना उन से झुककर।"

शीश झुका व्यापारी सब बाहर निकले,
फिर से लहरों पर उनका जल-यान चले।
राजकुमार गया तट पर – हंसिनी वहीं
मौज मनाती थी लहरों में निकट कहीं।
बोला राजकुमार : "दुखी है मन मेरा
पिता मिलन की चाह, तड़प ने दिल घेरा.
पुनः हंसिनी ने पानी की धार उछाल
उसे भिगोया उस पर ख़ूब फुहारें डाल,
राजकुमार उसी क्षण मक्खी में बदला
ऊंचा उड़ता हुआ पोत की ओर चला,
नभ, सागर के बीच उतर नीचे आया
ढूंढ पोत में छेद, स्वयं को दुबकाया।

हर्ष-मगन-सा पवन मचाये ऊंचा शोर
पोत ख़ुशी से भागा जाता था उस ओर,
जहां बसा वह द्वीप कि जिसको कहें बुयान
जहां यशस्वी ज़ार राज करता सल्तान,
यही सुहाना देश सभी का मन-भाता
बहुत दूर से देखो, नजर वही आता ;
लो, व्यापारी उतर सभी तट पर आये
ज़ार महल में अपने सबको बुलवाये,
उनके पीछे वीर हमारा तेज उड़े
जिधर बढ़ें व्यापारी, वह भी उधर बढ़े,
देखा – स्वर्णिम चमक रहे पहने परिधान
सभा-भवन में बैठा है राजा सल्तान,

ऊंचा सिंहासन है, मुकुट बड़ा सुन्दर
लेकिन कुछ चिन्ता-रेखा दिखती मुख पर,
और जुलाहिन, कानी मौसी बावर्चिन
संग मिली थी जिनके मां भी बबरीखिन,
बैठी थीं तीनों सिंहासन से सटकर
क्रुद्ध मेढकों-सी आंखों में गुस्सा भर।
मेहमानों को निकट ज़ार ने बिठा लिया,
दे आदर-सम्मान, और यह प्रश्न किया :
"तुम व्यापारी, कहो, कहां पर हो आये ?
क्या-क्या देखा और जान क्या कुछ पाये ?
सागर-पार हाल कैसा है दुनिया का ?
चमत्कार या कहीं अजूबा तुम्हें दिखा ?"
बोले उससे व्यापारी तो यह सुनकर :
"दुनिया भर का पूरा कर आये चक्कर –
सागर-पार हाल अच्छा है दुनिया का,
एक अजूबा, चमत्कार यह हमें दिखा,
द्वीप एक है किसी जगह पर सागर में
बसा हुआ है सुन्दर एक नगर उसमें,
स्वर्ण गुम्बजों वाले हैं गिरजे ऊंचे
बुर्ज-बुर्जियां, वहां बाग हैं बागीचे ;
फ़र का वृक्ष महल के सम्मुख एक बड़ा
बिल्लौरी घर उसके नीचे एक खड़ा,
वहां पालतू चतुर गिलहरी एक रहे
कैसी अद्भुत, कोई यह सब भला कहे !
तरह-तरह के गीत गिलहरी वह गाती
अखरोटों को सदा कुतरती वह जाती,
पर अखरोट न मामूली, आश्चर्य बड़ा
उनके छिलके तो हैं सच्चा, स्वर्ण खरा,
उनकी गिरियां हैं असली मरकत मणियां
ठाठ गिलहरी के तो सचमुच हैं ख़ूब वहां,
तरह-तरह के नौकर सेवा में हाजिर,
एक मुनीम वहां बैठा गिनता सत्वर
अखरोटों को, रखता उनका पूरा ध्यान
सैनिक करें गिलहरी का आदर-सम्मान,
उन छिलकों से सोने के सिक्के ढलते
लेन-देन के लिये वही सिक्के चलते,
जमा दासियां करती हैं मरकत मणियां
संचित करती जातीं, जाने गुप्त कहां,
लोग द्वीप पर रहनेवाले सब धनवान,
नहीं झोंपड़ा एक, भवन सब ओर, मकान,
राज करे ग्वीदोन, यही है उसका नाम

ग्रौर कहा है उसने सादर तुम्हें प्रणाम।"
हुग्रा बहुत ग्राश्चर्य ज़ार को यह सुनकर
बोला: "ज़िन्दा इस दुनिया में रहा ग्रगर,
तो ग्रवश्य मैं द्वीप ग्रनूठा देखूंगा,
कभी ग्रतिथि ग्वीदोन ज़ार का मैं हूंगा।"
किन्तु जुलाहिन ग्रौर बहन जो बावर्चिन
संग मिली थी जिनके मां भी बबरीखिन,
नहीं चाहतीं उनका ज़ार वहां जाये
ग्रजब-ग्रनूठा द्वीप देखने वह पाये।
बड़े व्यंग्य से बहन मुस्करा मंझोली
ज़ार पिता से दुष्ट जुलाहिन यों बोली:
"यह क्या हुग्रा ग्रजूबा, जो हैरान करे!
एक गिलहरी बस, ग्रखरोटों को कुतरे,
करे इकट्ठा सोना ग्रौ' मरकत मणियां
उनके ढेर लगाती जाये यहां-वहां।
इससे कोई हमें न कर सकता हैरान,
कौन कहे, यह सच भी है या झूठ बयान।
किन्तु ग्रजूबा एक ग्रन्य है, लो सच मान,
बहुत ज़ोर का सागर में ग्राता तूफ़ान,
लहरें ऊंची उठतीं, शोर मचाती हैं,
सूने तट से जाकर वे टकराती हैं,
दूर-दूर तक सागर-जल फैले, बिखरे
एक ग्रजूबा ग्रांखों के सम्मुख उभरे,
ग्रंगारों-सी वर्दी में सागर के तीर
पड़ें दिखाई हमें ग्रचानक तैंतीस वीर,
सब ही बांके, बड़े साहसी सुघड़ जवान
महाबली वे, बहुत कड़ी है उनकी जान,
वे सांचे में ढले-ढलाये एक समान
चाचा चेर्नोमोर संग में है कप्तान।
ग्रगर ग्रजूबा कोई है, तो एक यही
मैंने सोलह ग्राने सच्ची बात कही!"
समझदार व्यापारी तो बस, मौन रहे
कौन बहस में पड़े, भला क्या उसे कहे!
ज़ार हुग्रा हैरान, ग्रचम्भे में ग्राया,
पर ग्वीदोन बहुत ही मन में झल्लाया...
उड़ा उसी क्षण बहुत ज़ोर से भनभन कर
जा बैठा मौसी के बायें लोचन पर,
रंग उड़ा बुनकर का वह तो चिल्लाई
ज्योति ग्रांख की गयी, तमिस्रा-सी छाई।
सब चिल्लायें: "ग्ररे, झपट इसको लेना
निकल न पाये मक्खी, कुचल इसे देना...
ठहर ज़रा तो, ग्रभी चखायें तुझे मज़ा..."
राजकुमार मगर खिड़की से बाहर जा,
बड़े चैन से उड़कर सागर पार गया
उसी राज्य में ग्रपने, जिसमें नगर नया।

खड़ा हुग्रा था तट पर वह ले भारी मन
ताक रहे थे नीला सागर विकल नयन,
देखा उसने – सागर-लहरें, खारा नीर
बढ़ी ग्रा रही श्वेत हंसिनी सागर-तीर,
"नमस्कार करती हूं तुमको, राजकुमार,
क्यों उदास दिन जैसे, दिल पर कैसा भार?
किस पीड़ा ने ख़ुशी तुम्हारे मन की ली?"
श्वेत हंसिनी बहुत निकट ग्रा यों बोली।
बोला उससे राजकुमार दुखी होकर:
"बोझ उदासी, पीड़ा का मेरे मन पर,
एक ग्रजूबा ऐसा तुमको बतलाऊं
जिसे राज्य में ग्रपने लाना मैं चाहूं।"
"कौन ग्रजूबा ऐसा? यह तुम करो बयान।"
"कहीं, दूर सागर में ग्राता है तूफ़ान,
लहरें ऊंची उठतीं, शोर मचाती हैं,
सूने तट से जाकर वे टकराती हैं,
दूर-दूर तक सागर-जल फैले, बिखरे
एक ग्रजूबा ग्रांखों के सम्मुख उभरे,
ग्रंगारों-सी वर्दी में सागर के तीर
पड़ें दिखाई हमें ग्रचानक तैंतीस वीर,
सब ही बांके, बड़े साहसी, सुघड़ जवान
महाबली वे, बहुत कड़ी है उनकी जान,
वे सांचे में ढले-ढलाये एक समान
चाचा चेर्नोमोर संग उनके कप्तान।"
दिया हंसिनी ने सुन उसको यह उत्तर:
"बस, इतनी-सी बात बोझ जिसका मन पर?
दुखी न हो तुम प्यारे, तुमसे यही कहूं
ग्रच्छी तरह ग्रजूबे से इस परिचित हूं।
बात समुद्री वीरों की जो बतलाई
वे सब तो मेरे मां के जाये भाई।
जाग्रो ग्रपने महल हृदय की व्यथा हरो,
इन्तज़ार मेरे भाइयों का वहीं करो।"

राजकुमार चला घर को, मन था हल्का
बुर्जी में जा बैठा वह तो नज़र टिका,
सागर ताके, तभी ग्रचानक जल मचला
हो समुद्र बेचैन सभी दिशि में उछला,
शोर मचाता हुग्रा ज़ोर से वह दौड़े
ग्रौर किनारे पर ग्रपने लाकर छोड़े,
तैंतीस वीर, ग्रनूठे, जिनके क्या कहने
ग्रंगारों-सी भड़कीली वर्दी पहने,
वे जोड़ों में बंटे हुए बढ़ते ग्राते
ग्रागे चाचा, श्वेत केश थे लहराते,
वे ही थे कप्तान, रास्ता दिखलायें
नगर-द्वार की ग्रोर सभी को ले जायें।
बुर्जी से नीचे को भागा राजकुमार
मेहमानों का करने को ग्रादर-सत्कार।
लोग भागते ग्रायें होकर सब हैरान,
"राजकुमार सुनो," बोला चाचा कप्तान,
"पास तुम्हारे हमें हंसिनी ने भेजा,

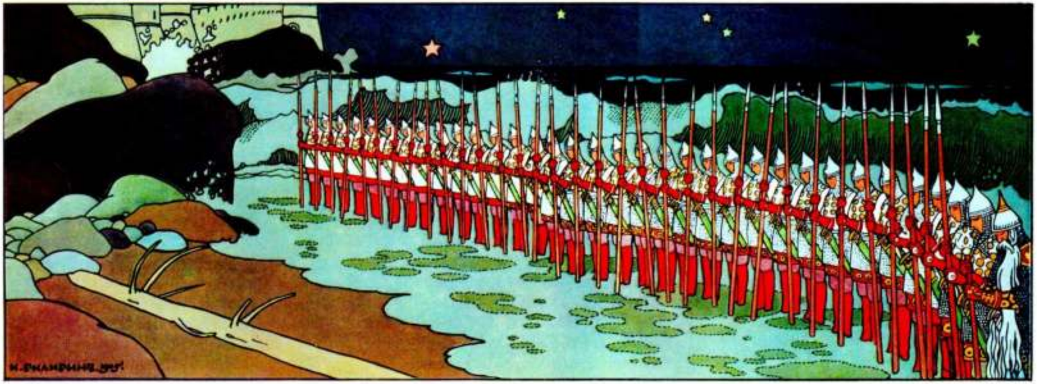

उसने हम से यही कहा, आदेश दिया,
सुन्दर नगर तुम्हारा इसकी रखवारी
करनी होगी हम को ही चौकीदारी।
अब तो हम सब एकसाथ हर दिन आयें
कभी न भूलें, आलस ज़रा न दिखलायें,
दीवारों के निकट रहें हर रोज़ तने
आ सागर से बाहर हम तैंतीस जने,
जल्द मिलेंगे फिर से अब हम को जाना
सागर की लहरों में चैन तनिक पाना
ये पृथ्वी के अनुभव हैं कुछ कठिन नये।"
इतना कहकर सब पानी में लौट गये!

सुखद पवन सागर पर बहता जाता था,
एक पोत को अपने संग बहाता था,
वह लहरों पर मानो दौड़ा जाता था,
फूले-फूले पालों को फहराता था,
खड़े तटों का द्वीप पास से जब गुज़रा,

नगर बड़ा-सा एक सामने जब उभरा,
गरजीं तोपें मानो यह संकेत किया
पोत यहीं रुक जाये यह आदेश दिया,
तट पर खड़े हुए ये व्यापारी-मेहमान
उन्हें बुलाया राजा ने करने जल-पान,
ख़ूब खिलाकर और पिला मदिरा जी भर
यह अनुरोध किया प्रश्नों के दें उत्तर,
बतलायें: "किन चीज़ों का करते व्यापार
और किधर अब जायेंगे इस सागर-पार?"
बोले उससे व्यापारी तो यह सुनकर:
"काट चुके हम सारी दुनिया का चक्कर,
संग लिया इस्पात किया उसका व्यापार,
असली चांदी, सोना बेचा सागर-पार,
देर हुई, अब जल्दी से घर को जाना
मंज़िल दूर बहुत, पथ सीधा अपनाना,
उसी राह से जहां मार्ग में द्वीप बुयान
जहां यशस्वी राजा राज करे सल्तान..."

बोला उनसे तभी प्रतापी राजकुमार:
"यात्रा सफल तुम्हारी हो सागर के पार,
लांघो तुम सब सागर और महासागर,
पहुंचो वहां, राज ज़ार का जहां, जिधर,
नमस्कार मेरा कहना उनसे झुककर।"

शीश झुका व्यापारी सब बाहर निकले,
फिर से लहरों पर उनका जलयान चले,
राजकुमार गया तट पर – हंसिनी वहीं
मौज मनाती थी लहरों में निकट कहीं,
बोला फिर ग्वीदोन: "दुखी है मन मेरा
पिता मिलन की चाह, तड़प ने दिल घेरा..."
पुनः हंसिनी ने पानी की धार उछाल
उसे भिगोया उस पर ख़ूब फुहारें डाल।
पलक झपकते में लघु बनकर वह बदला
एक ततैये, भिड़ में उसका रूप ढला,
भिन-भिन करता वह तो तेज़ उड़ा ऊंचा

सागर में जा रहे पोत तक जा पहुंचा,
चुपके-चुपके वह तो अब नीचे आया
ढूंढ़ पोत में छेद, स्वयं को दुबकाया।

हर्ष-मगन-सा पवन मचाये ऊंचा शोर
पोत ख़ुशी से भागा जाता था उस ओर,
जहां बसा वह द्वीप कि जिसको करें बयान
जहां यशस्वी ज़ार राज करता सल्तान,
यही सुहाना देश सभी का मन-भाता
बहुत दूर से देखो, नज़र यही आता,
लो, व्यापारी निकल सभी तट पर आये,
ज़ार महल में अपने सबको बुलवाये,
उनके पीछे वीर हमारा तेज उड़े
जिधर बढ़ें व्यापारी, वह भी उधर बढ़े।
देखा – स्वर्णिम चमक रहे पहने परिधान
सभा-भवन में बैठा है राजा सल्तान,
ऊंचा सिंहासन है, मुकुट बड़ा सुन्दर,
लेकिन कुछ चिन्ता-रेखा दिखती मुख पर,
और जुलाहिन वहीं, वहीं पर बावर्चिन
संग मिली थी जिनके मां भी बबरीखिन,
बैठी थीं बेहद सिंहासन से सटकर
जमे तीन के चार नयन थे राजा पर।
मेहमानों को निकट ज़ार ने बिठा लिया
दे आदर-सम्मान, और यह प्रश्न किया:
"तुम व्यापारी, कहो, कहां पर हो आये?
क्या-क्या देखा और जान क्या कुछ पाये?
सागर-पार हाल कैसा है दुनिया का?
चमत्कार या कहीं अजूबा तुम्हें दिखा?"
दिया उसे व्यापारी दल ने यह उत्तर:
"दुनिया भर का पूरा कर आये चक्कर,
सागर-पार हाल अच्छा है दुनिया का,
एक अजूबा, चमत्कार यह हमें दिखा –
द्वीप एक है किसी जगह पर सागर में
बसा हुआ है सुन्दर एक नगर उसमें,
हर दिन होता वहां अजूबा करें बयान –
बहुत ज़ोर से सागर में आता तूफ़ान,
लहरें ऊंची उठतीं, शोर मचाती हैं,
सूने तट से वे जाकर टकराती हैं,
दूर-दूर तक सागर-जल फैले, बिखरे
तभी अजूबा आंखों के सम्मुख उभरे,
अंगारों-सी वर्दी में सागर के तीर
हमें दिखाई देने लगते तैंतीस वीर,
सब ही बांके, बड़े साहसी, सुघड़ जवान
महाबली वे, बहुत कड़ी है उनकी जान,
सब सांचे में ढले-ढलाये एक समान
चाचा चेर्नोमोर संग उनके कप्तान,
एकसाथ सब सागर से बाहर आयें
चाचा उनको जोड़ों में ले बढ़ जायें,
ताकि द्वीप की ख़ूब कड़ी हो रखवारी
सभी ओर से अच्छी हो चौकीदारी,
पहरा इससे और न बढ़िया हो सकता
ऐसे अच्छे वीरों का, इतना जंचता।
राज करे ग्वीदोन वहां, यह उसका नाम
और कहा है उसने सादर तुम्हें प्रणाम।"
हुआ बहुत आश्चर्य ज़ार को यह सुनकर
बोला: "ज़िन्दा इस दुनिया में रहा अगर,
तो अवश्य मैं द्वीप अनूठा देखूंगा,
कभी अतिथि ग्वीदोन ज़ार का मैं हूंगा।"
गुपचुप बैठी रहीं जुलाहिन, बावर्चिन
बोल न फूटा मुंह से, लेकिन बबरीखिन,
बड़े व्यंग्य से हंसी और फिर यों बोली:
"हो जायें हम चकित नहीं ऐसी भोली,
लोग निकलकर सागर से देते पहरा
कौन अजूबा इसमें कोई कहे ज़रा?
नहीं जानती झूठ कि कितना सच इसमें
नहीं अजूबा लगता यह तो तनिक हमें।
लेकिन तुम्हें अजूबा मैं जो बतलाती
उसके सच की चर्चा मैं जग में पाती –
राजकुमारी एक कहीं है सागर-पार
थकें न आंखें उसका अद्भुत रूप निहार,
दिन में सूरज का प्रकाश भी शर्माये
और रात को वह तो जग-जग चमकाये,
उसकी चोटी के नीचे है शशि प्यारा
और चमकता माथे पर उसके तारा।
है वह बेहद सुन्दर, अद्भुत रूप, जमाल
और मोरनी जैसी उसकी मोहक चाल,
ऐसी मीठी वाणी उसकी, ऐसा स्वर
मानो किसी मधुर झरने की हो झरझर।
कहें न्याय की बात तो मानो यही सही
अगर अजूबा है जग में तो एक यही।"
समझदार व्यापारी तो बस, मौन रहे
कौन बहस में पड़े, भला क्या उसे कहे!
ज़ार हुआ हैरान, अचम्भे में आया
था ग्वीदोन बहुत ही बेशक झल्लाया,
फिर भी इस बुढ़िया नानी की आंखों पर
तरस आ गया, बख़्शी उसकी मन्द नज़र,
उसके ऊपर चक्कर काटे, कर भनभन
और नाक पर जा बैठा वह अगले क्षण,
डंक ज़ोर से मारा शक्ति लगा सारी
सूजी तत्क्षण नाक, जले ज्यों चिंगारी,
और मच गया फिर से घर में शोर बड़ा:
"पकड़ो, पकड़ो, वह जाता है उधर उड़ा,
भागो, भागो, अरे झपट इसको लेना,
निकल न पाये दुष्ट, कुचल इसको देना,
ठहर ज़रा तो, अभी चखायें तुझे मज़ा ..."
किन्तु ततैया तो खिड़की से बाहर जा,

Then they sat down to feast

बड़े चैन से उड़कर सागर पार गया,
उसी द्वीप को, जहां बसा था नगर नया।

राजकुमार खड़ा तट पर ले भारी मन
ताक रहे थे नीला सागर विकल नयन,
देखा उसने – सागर-लहरें, धारा चीर
बढ़ी आ रही श्वेत हंसिनी सागर-तीर,
"नमस्कार करती हूं तुमको राजकुमार,
क्यों उदास दिन जैसे, दिल पर कैसा भार?
किस पीड़ा ने खुशी तुम्हारे मन की ली?"
श्वेत हंसिनी बहुत निकट आ यों बोली।
बोला उससे राजकुमार दुखी होकर:
"बोझ उदासी, पीड़ा का मेरे मन पर –
लोग-बाग शादी करते हैं, मैं देखूं
अब तक जग में सिर्फ़ अकेला मैं ही हूं।"
"मुझे बताओ, कौन तुम्हारे है दिल में?"
"कहते हैं इस दुनिया, जग के आंचल में,
राजकुमारी एक कहीं ऐसी सुन्दर
नयन देखते रहें, भरे पर नहीं नजर,
दिन में सूरज का प्रकाश भी शर्माये
और रात को वह तो अग-जग चमकाये,
उसकी चोटी के नीचे है शशि प्यारा
और चमकता माथे पर उसके तारा।
है वह बेहद सुन्दर, अद्भुत रूप, जमाल
और मोरनी जैसी उसकी मोहक चाल,
ऐसी मीठी वाणी उसकी, ऐसा स्वर
मानो किसी मधुर झरने की हो झरझर
नहीं जानता यह है कितना सत्य मगर?"
कम्पित मन से विह्वल सुनने को उत्तर।
श्वेत हंसिनी कुछ क्षण को खामोश रही,
सोचा-समझा मन में फिर यह बात कही:
"ऐसी लड़की है जग में, मैंने जाना,
लेकिन बीवी को मत समझो दस्ताना,
जिसे हाथ से तुम उतार कर फेंक सको
कमरबन्द से अपने या तुम जिसे कसो,
म सलाह जो देती हूं तुम उसे सुनो
सोच-विचार करो तुम मन में उसे गुनो,
इस मसले में उचित न जल्दी दिखलाना
ताकि बाद में पड़े न तुमको पछताना।"
बोला तब ग्वीदोन और की मिन्नत भी
वक़्त आ गया, अब उसको करनी शादी,
इस मसले पर उसने सोच-विचार लिया
बहुत समझ से उसने निर्णय यही किया,
राजकुमारी का ले दिल में अपने प्यार
जाने को तैयार सात सागर के पार,
पा जाने को उसे जरूरत अगर पड़े,
वह पैदल ही दुनिया भर का सफ़र करे।
श्वेत हंसिनी ने यह सुनकर छोड़ा श्वास
बोली: "दूर न जाना होगा, वह तो पास
चाह जल्द ही पूरी होगी, यही कहूं
तेरे मन की राजकुमारी मैं ही हूं।"
इतना कह वह पंख हिलाती हुई उड़ी
लहरों से ऊपर उठ, नभ में दूर चढ़ी,
फिर ऊंचाई से सागर-तट पर उतरी
जहां झाड़ियां घनी-घनी थीं हरी-भरी,
झटके उसने पंख जोर से हिली-डुली
और अचानक राजकुमारी में बदली,
जिसकी चोटी के नीचे था शशि प्यारा
और चमकता माथे पर जिसके तारा,
थी वह बेहद सुन्दर अद्भुत रूप, जमाल
और मोरनी जैसी उसकी मोहक चाल,
ऐसी मीठी वाणी, उसका ऐसा स्वर
मानो किसी मधुर झरने की हो झरझर।
भर बांहों में राजकुमारी, हर्षाया
गोरी छाती से झट उसको चिपकाया;
नहीं जरा की देर, महल में वह आया,
प्यारी मां के पास उसे फ़ौरन लाया,
पकड़े मां के पैर और यह मिन्नत की:
"पत्नी मैंने अपने लिये यही चुन ली,
तुम स्वीकारो अम्मां दो आशीश हमें,
यह बन अच्छी बेटी देगी चैन तुम्हें,
दे दो हमें इजाजत शादी करने की,
करो कामना यही, रहें हम सदा सुखी,
मेल-जोल से दोनों का जीवन बीते
और कभी भी नहीं प्यार से मन रीते।"
इन दोनों के झुके सिरों के ही ऊपर
करामात की देव-मूर्त्ति कर में लेकर,
अश्रु बहाती हुई खुशी के मां बोली:
"सुख से भरी रहे तुम दोनों की झोली।"
राजकुंवर ने नहीं लगाई देर जरा
कर ली शादी पर्व मनाया खुशीभरा,
प्यारे दिन बीतें दोनों के हर्ष मगन
करें प्रतीक्षा कब होंगे शिशु के दर्शन।

सुखद पवन सागर पर बहता जाता था
एक पोत को अपने संग बहाता था,
वह लहरों पर मानो दौड़ा जाता था
फूले-फूले पालों को फहराता था,
खड़े तटों का द्वीप पास से जब गुजरा,
नगर बड़ा-सा एक सामने जब उभरा,
गरजीं तोपें मानो यह संकेत किया,
पोत यहीं रुक जाये यह आदेश दिया,
खड़े हुए थे तट पर व्यापारी-मेहमान
उन्हें बुलाया राजा ने करने जल-पान,
खूब खिलाकर और पिला मदिरा जी भर
यह अनुरोध किया प्रश्नों के दें उत्तर,

बतलायें : "किन चीज़ों का करते व्यापार
और किधर अब जायेंगे इस सागर-पार?"
बोले उससे व्यापारी तो यह सुनकर :
"काट चुके हम सारी दुनिया का चक्कर,
माल ग़ैरक़ानूनी बेच बहुत आये,
पैसा ढेरों-ढेर कमाकर हम लाये,
देर हुई, अब जल्दी से घर को जाना
पथ पूरब का हमको सीधे अपनाना,
उसी राह से, जहां मार्ग में द्वीप बुयान
जहां यशस्वी राजा राज करे सल्तान।"
बोला उनसे तभी प्रतापी राजकुमार :
"यात्रा सफल तुम्हारी हो सागर के पार,
लांघो तुम सब सागर और महासागर,
पहुंचो वहां, राज ज़ार का जहां, जिधर
इतना याद दिला देना तुम बस, उनको
अपने ज़ार यशस्वी, अपने राजन को,
द्वीप हमारे आने का था वचन दिया,
पर यह वादा अब तक पूरा नहीं किया,
कहना तुम प्रणाम उनसे मेरा सादर।"
सौदागर फिर निकले अपनी यात्रा पर,
नहीं गया ग्वीदोन संग उनके इस बार,
रहा पास पत्नी के जिससे उसको प्यार।

हर्ष-मगन-सा पवन मचाये ऊंचा शोर
पोत ख़ुशी से भागा जाता था उस ओर,
जहां बसा वह द्वीप कि जिसको कहें बुयान,
जहां यशस्वी ज़ार राज करता सल्तान,
यही सुहाना देश सभी का मन-भाता
बहुत दूर से देखो, नज़र वही आता,
लो, व्यापारी उतर सभी तट पर आये
ज़ार महल में अपने उनको बुलवाये,
बन -ठाविक – पहने अति सुन्दर परिधान
सभा-भवन में बैठा है राजा सल्तान,
और जुलाहिन वहीं, वहीं पर बावर्चिन
संग मिली थी जिनके मां भी बबरीखिन,
बैठी थीं बेहद सिंहासन से सटकर
जमे तीन के चार नयन थे राजा पर।
मेहमानों को निकट ज़ार ने बिठा लिया,
दे आदर-सम्मान, और यह प्रश्न किया :
"तुम व्यापारी, कहो, कहां पर हो आये?
क्या क्या देखा और जान क्या कुछ पाये?
सागर-पार हाल कैसा है दुनिया का?
चमत्कार या कहीं अजूबा तुम्हें दिखा?"
दिया उसे व्यापारी दल ने यह उत्तर :
"दुनिया भर का पूरा कर आये चक्कर,
सागर-पार हाल अच्छा है दुनिया का,
एक अजूबा, चमत्कार यह हमें दिखा,
द्वीप एक है किसी जगह पर सागर में,
बसा हुआ है सुन्दर एक नगर उसमें,
स्वर्ण गुम्बजों वाले हैं गिरजे ऊंचे
बुर्ज-बुर्जियां, वहां बाग़ हैं बाग़ीचे,
फ़र का वृक्ष महल के सम्मुख एक बड़ा
बिलौरी घर उसके नीचे एक खड़ा,
वहां पालतू, चतुर गिलहरी एक रहे
कैसी अद्भुत, कोई यह सब भला कहे!
तरह-तरह के गीत गिलहरी वह गाती
अखरोटों को सदा कुतरती वह जाती,
पर अखरोट न मामूली, आश्चर्य बड़ा
उनके छिलके तो हैं सच्चा, स्वर्ण खरा,
उनकी गिरियां हैं असली मरकत मणियां
चिन्ता बड़ी गिलहरी की सब करें वहां।
एक अजूबा और वहीं, हम करें बयान –
बहुत ज़ोर से सागर में आता तूफ़ान,
लहरें ऊंची उठतीं, शोर मचाती हैं
सूने तट से वे जाकर टकराती हैं,
दूर-दूर तक सागर-जल फैले, बिखरे
तभी अजूबा आंखों के सम्मुख उभरे,
अंगारों-सी वर्दी में सागर के तीर
हमें दिखाई देने लगते तैंतीस वीर,
सब ही बांके, बड़े साहसी, सुघड़ जवान
महाबली वे, बहुत कड़ी है उनकी जान,
सब सांचे में ढले-ढलाये एक समान
चाचा चेर्नोमोर संग उनके कप्तान।
पहरा इससे और न बढ़िया हो सकता
ऐसे अच्छे वीरों का, इतना जंचता।
उस राजा की पत्नी है ऐसी सुन्दर
नयन देखते रहें, भरे पर नहीं नज़र,
दिन में सूरज का प्रकाश भी शर्माये
और रात को वह तो जग-जग चमकाये,
उसकी चोटी के नीचे है शशि प्यारा
और चमकता माथे पर उसके तारा।
राजा है ग्वीदोन, यही वह कहलाये
हर कोई ही उस राजा के गुण गाये,
उसने तो है सादर तुम्हें प्रणाम कहा
पर यह शिकवा किये बिना वह नहीं रहा –
'द्वीप हमारे आने का था वचन दिया
क्यों यह वादा अब तक पूरा नहीं किया!'"

ज़ार न क़ाबू अपने पर अब रख पाया,
हो बेड़ा तैयार हुक्म यह दिलवाया,
लेकिन बुनकर और बहन जो बावर्चिन
संग मिली थी जिनके मां भी बबरीखिन
नहीं चाहतीं उनका ज़ार वहां जाये
अजब-अनूठा द्वीप देखने वह पाये।
नहीं ज़रा परवाह ज़ार ने उनकी की,
गुस्से में आ उनको उल्टे घुड़की दी,

"मैं हूं ज़ार, नहीं कोई छोटा बच्चा।
बहुत बनोगी चतुर न फल होगा अच्छा।
आज जा रहा!" कहा, पांव धरती पर मार
निकला बाहर, बन्द ज़ोर से करके द्वार।

था खिड़की से सटा हुआ बैठा ग्वीदोन,
ताक रहा था वह सागर को गुमसुम, मौन,
सागर में था शोर न लहरों का गरजन
धीरे-धीरे बहे, तनिक होता स्पन्दन,
हरित-नीलिमा में हल्की-सी, दूरी पर
पोत बहुत-से उसे अचानक पड़े नज़र,
दूर-दूर तक फैला सागर, विपुल, महान
उसमें बेड़ा बहे, ज़ार जिसमें सल्तान।
बेड़ा देख, ग्वीदोन हृदय में हर्षाया
उछल पड़ा वह, और ज़ोर से चिल्लाया:
"जल्दी से आ जाओ तुम, प्यारी अम्मां,
राजकुमारी, तुम भी आओ भाग यहां!
देखो तो उस ओर पाल हैं फहराते,
मेरे प्यारे पिता इधर ही तो आते।"
बेड़ा आया निकट द्वीप के, जब तट के
दूरबीन ग्वीदोन हाथ में ले झट से,
देखे – उनका ज़ार पोत पर खड़ा हुआ
दूरबीन से ख़ुद इनको ही देख रहा,
है जहाज़ पर बुनकर भी बावर्चिन भी
और संग में उनकी मां बबरीखिन भी,
ये सब के सब थे मानो बेहद हैरान,
देख अनूठा नगर नया, जिससे अनजान।
गरज उठीं तोपें करने को अभिनन्दन,
गूंज उठे गिरजों के घण्टे भी टनटन,
ख़ुद ग्वीदोन गया तट पर स्वागत करने
अपने ज़ार पिता की आव-भगत करने,
वह तो मौसी बुनकर को, बावर्चिन को
अपनी बुढ़िया नानी को बबरीखिन को,
संग शहर में अपने सबको ले आया,
नहीं ज़ार को उसने कुछ भी बतलाया।

राज-भवन को बढ़े आ रहे सब सत्वर
सिंहद्वार के सम्मुख चमक रहे बकतर,
देखे ज़ार बहुत होकर मन में हैरान
खड़े हुए तेंतीस सूरमा छाती तान,
सब ही बांके, बड़े साहसी, सुघड़ जवान
महाबली वे, बहुत कड़ी है जिनकी जान,
वे सांचे में ढले-ढलाये एक समान
चाचा चेर्नोमोर संग में है कप्तान।
चौड़े आंगन में जब ज़ार पिता पहुंचा,
देखा, फ़र का वृक्ष खड़ा उसमें ऊंचा,
उसके नीचे एक गिलहरी कुछ गाये,
सोने के अखरोट तोड़ती वह जाये,
मरकत मणियां उनमें से वह रही निकाल
तुरत बोरियों में वह देती उनको डाल,

राज-भवन का आंगन इतना बड़ा-बड़ा
सोने के छिलकों से वह था भरा-भरा।
अब मेहमान बढ़े आगे जल्दी-जल्दी
राजकुमारी उनको अजब दिखाई दी –
जिसकी चोटी के नीचे था शशि प्यारा
चमक रहा था जिसके मस्तक पर तारा,
ख़ुद थी बेहद सुन्दर, अद्भुत रूप, जमाल
और मोरनी जैसी उसकी मोहक चाल,
साथ चल रही उसके, उसकी प्यारी सास,
जिसे लिया पहचान ज़ार ने जाकर पास...
चौंक उठा वह और हृदय उसका धड़का!
"देख रहीं क्या आंखें मेरी? यह है क्या?
कैसे हुआ भला यह क़िस्सा?" दिल उमड़ा.
आंखों से आंसू का चश्मा फूट पड़ा,
लिया ज़ार ने रानी को झट गले लगा
बेटे, पुत्र-वधू को छाती से चिपका,
जा बैठे सब वहां, जहां थी मेज़ सजी
बढ़िया दावत शुरू हो गयी हंसी-ख़ुशी।
लेकिन बुनकर और बहन जो बावर्चिन
संग मिली थी जिनके मां भी बबरीखिन,
भाग गयीं, कोनों में जाकर छिपीं कहीं
उनको ढूंढ़ा गया और वे मिलीं वहीं।
जो कुछ जैसा किया, सभी वह मान गयीं,
अपने को अपराधी कह, रोयीं-धोयीं,
और ज़ार ने हंसी-ख़ुशी के अवसर पर
दण्ड न देकर भेजा उनको वापस घर।
हुई रात तो बिस्तर पर लेटा सल्तान
कुछ-कुछ झूम रहा था वह कर मदिरा-पान।
मैंने भी उस जगह बियर औ' शहद पिया,
लेकिन अपनी मूंछों को बस, भिगो लिया।

अनुवादक : डा० मदनलाल 'मधु'

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।

हमारा पता है :

प्रगति प्रकाशन,
२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ

А. ПУШКИН

СКАЗКА О ЦАРЕ САЛТАНЕ

На языке хинди